Name of Paper :: DAINIK JAGRAN

Published at : NEW DELHI

Dated : 27 JUN 2007

अफीम का सबसे बड़ा उत्पादक है अफगानिस्तान

न्यूयार्क, एजेंसियां : दुनिया में अवैध तरीके से अफीम के उत्पादन के मामले में अफगानिस्तान का एकाधिकार है। यह अफीम के चूरे को हेरोइन और मारफीन में बदलने में सक्षम अव्वल देश है।

- संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूएनओडीसी की रिपोर्ट
- इसके पीछे तालिबान की भूमिका सबसे अहम
- दुनिया में 20 करोड़ लोग करते हैं नशाखोरी

संयुक्त राष्ट्र के वियना स्थित मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय (यूएनओडीसी) की वर्ष 2007 की रिपोर्ट के अनुसार देश के दो महत्वपूर्ण नशीले पदार्थों के उत्पादन में अग्रणी होने से यह आशंका है कि वहां के लोग हेरोइन या अफीम के आदी हो जाएंगे। यूएनओडीसी की अफगानिस्तान में प्रतिनिधि क्रिस्टिना ग्राना ओगुज ने सालाना रिपोर्ट में कहा है कि अफगानिस्तान में गत वर्ष 6,000 टन अफीम का उत्पादन हुआ। यह विश्व उत्पादन का कुल 92 फीसदी है। अकेले हेलमंड प्रांत में 42 फीसदी अफीम का उत्पादन होता है। उन्होंने कहा कि अफीम उत्पादन और आपराधिक नेटवर्क में नजदीकी संबंध है। अफीम उत्पादन से प्राप्त रकम का इस्तेमाल देश में अस्थिरता फैलाने में किया जाता है। उन्होंने बताया कि यह धारणा गलत है कि अफगानिस्तान में उत्पादित अफीम देश के बाहर ले जाकर उससे हेरोइन और मारफीन बनाई जाती है। अधिकांश मारफीन और हेरोइन का उत्पादन अफगानिस्तान में ही किया जाता है। क्रिस्टिना ने कहा कि देश के मध्य और उत्तरी भाग में अफीम की खेती में कमी दर्ज की गई है। इस कारण यहां सुरक्षा हालात भी अपेक्षाकृत बेहतर हैं। यूएनओडीसी के अधिकारी गैरी लेविस का दावा है कि अफगानिस्तान को मादक द्रव्यों के धंधे का केंद्र बनाने में तालिबान की भूमिका है। आईएएनएस के साथ ईमेल साक्षात्कार में गैरी ने कहा कि अफगानिस्तान में यह धंधा ऐसे लोगों के हाथों में केंद्रित है जो तालिबान और अल कायदा से जुड़े हुए हैं। इनमें से कई ने अपनी निजी सेना भी खड़ी कर रखी है। इनके संबंध मध्य एशिया और पाकिस्तान के कट्टरपंथियों से भी हैं। उनके मुताबिक 80 फीसदी अफीम का धंधा पाकिस्तान और ईरान से होता है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि दुनिया की 15 से 64 वर्ष उम्र की कुल आबादी का करीब 5 फीसदी हिस्सा नशे का शिकार है। यूरोप और एशिया में अफीम के नशे का चलन सबसे अधिक है।